आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" मार्च 2026

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 28
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –27 । अंक–3 । फाल्गुन–चैत्र – स.2082 । मार्च 2026

होली के खूबसूरत रंगों की तरह आपको और आपके परिवार को रंगों-उमंगों, हर्ष-उल्लास से भरी शुभकामनाएं!!

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

आज बिरज में होरी रे रसिया...

कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥
अपने-अपने घर से निकसीं, कोई श्यामल, कोई गोरी रे रसिया॥

रेखा गॅस
एजन्सी

दु.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495.
rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 3383)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	5
संपादकीय	6
होली का पर्व और फुलैरा	7
सुहागिन एवं औसान देवी	9
होली	10
होली त्योहार के आयाम	13
होली - रंग सरस	15
पारंपरिक रसिया	16
हिंदू नवसंवत्सर् -- इतिहास और महत्ता	20
नवरात्रि में कंजिका पूजन	21
सार्वजनिक विनम्र अपील*	24
शाखा समाचार	25
समाज समाचार	26
बिछड़े स्वजन	26

अंक 3
मार्च 2026, वर्ष - 27

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED

BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा0 सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा), दिलीप जी, (फिरोजाबाद).

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा0 राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा), श्रीमती शिवांगी जी, भोपाल, श्रीमती अनुपमा जी, नोएडा

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर), अतुल जी (फिरोजाबाद).

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कोशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल), नमन जी, लखनऊ

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2) श्री पंकज जी, मुंबई 3) श्री प्रदीप जी, लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी, कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा 24) नृपेंद्र जी, फिरोजाबाद, 25) श्रीमती नीलम पाठक जी, भोपाल सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री नमन जी (फिरोजाबाद), उपसंयोजक

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर एवं भगिनी
सादर पालागन

पसीने की स्याही से जो लिखते हैं*अपने मुकद्दर को
उनके मुकद्दर के पन्ने कभी *खाली नहीं होते।*

रंगों के पर्व होली की ढेर सारी शुभकामनाएं

आशा है आप सभी लोग अपने परिवार सहित स्वस्थ एवं प्रसन्नचित कर्म करते हुये एवं दायित्वों का वहन कर रहे होंगे। होली के स्वर लहरियां विभिन्न स्थानों पर उठने लगी हैं, सुर,लय एवं संगीत के साथ धमार राग की होली मन को आनंदित कर देती है, हमारे समाज की परंपरागत होलियाँ 26 रागों में गई जाती है। यह धरोहर अभी भी हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित है। उड़ता हुआ गुलाल, टेसू के फूलों का प्राकृतिक रंग से सरोवर चौपाई जब ग्रामीण क्षेत्रों में घूमती है। उसका आनंद महसूस किया जा सकता है, शब्दों में उसे बॉध नहीं सकते।

समाज की महिलाएं सजग और जागृत हो जाए। निश्चित ही वह समाज विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ता है, समाज के पारंपरिक गीत परंपरा एवं संस्कारों का जिनका तेजी से क्षरण हो रहा था, उनको पुनर्जीवित करने में समाज की महिलाएं अग्रणी हो रही है। मैं श्रीमती बीना चतुर्वेदी, जयपुर को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की ओर से बधाई प्रेषित कर रही हूं कि उन्होंने हमारे पारंपरिक लोक गीतों को संग्रह कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है, जापे के गीत एवं नाच के गीत पुस्तकों के शीर्षक हैं। चतुर्वेदी समाज की परंपराओं और इतिहास का शोध केंद्र श्रीमती विनीता चौबे पूर्व संपादक चतुर्वेदी चन्द्रिका द्वारा पहले ही स्थापित किया जा चुका है उनको भी बधाई।

मेरा विभिन्न प्रकोष्ठों के संयोजकों से आग्रह है शाखा सभाओं के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित कर अपनी सक्रियता बढ़ाएं।

उन सभी बंधुओं को एक बार फिर से मैं सूचित करना चाहती हूं, जो अपनी पत्रिका रजिस्ट्री द्वारा मंगवाते थे, डाकखाने द्वारा रजिस्ट्री सेवा समाप्त कर दी गई है व स्पीड पोस्ट यथावत है। लेकिन पोस्टेज का खर्च ज्यादा है। विभिन्न शहरों में भिन्न-भिन्न राशि लगती है जो अमूमन 95 रुपए होती है, अन्य खर्च मिलाकर करीब एक पत्रिका पर 100 व्यय आता है। मुंबई कार्य कारिणी की बैठक में यह निश्चित किया गया जो बंधु पत्रिका स्पीड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं। उनसे आग्रह है कि वह 1200/- प्रतिवर्ष डाक सेवा हेतु जमा करें। तभी पत्रिका अलग से भेजी जा सकती है। आशा है आप सभी लोग राशि जमा करा के सहयोग करेंगे पत्रिका वितरण में।

हमारे बीच से विभिन्न परिवारों से उनके परिजन गोलोक वासी हो गए उन सभी पुण्य आत्माओं को प्रभु के श्री चरणों में स्थान प्राप्त हो तथा परिवार जन को धैर्य। मैं स्वयं अपनी ओर से एवं महासभा की ओर से दुखी मन से श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

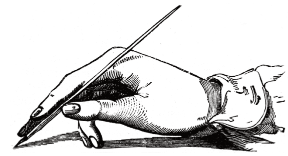

आदरणीय बंधुवर सादर पालागन एवं हिन्दू नववर्ष संवत 2083 वि पर हार्दिक अभिनंदन।।
बही बसंत बयार तो मौसम ली अंगड़ाई।
मन बहकने लगा मतलब होली आई।।

अब होली भी दीवाली की तरह अंतरराष्ट्रीय त्योहार हो गया, ब्रज क्षेत्र के होलिकात्सव को भी यूनेस्को के प्रतिष्ठित उत्सवों में शामिल करने के प्रयास जारी हैं। भारत में सभी प्रांतों में अपने अपने ढंग से होली के रंगीन त्योहार को हर्षोल्लास से मनाया जाता है। मैसूर का दशहरा, गुजरात का पतंग महोत्सव की भांति ही ब्रज का होलिकात्सव का आनंद लेने हेतु देश विदेश से पर्यटक पहुंचते हैं। समय–समय पर बदलते हालात के कारण चतुर्वेदी समाज भी विश्व व्यापी हो गया है, हमारे लिए गर्व की बात सभी बांधव उस जगह को ध्यान में रखते हुए आज भी होली खेलना एवं गायन को जिंदा रखे हुए हैं। कोलकाता के बल्देव मंदिर की ऐतिहासिक पौराणिक परम्परा अभी भी चल रही हैं,उसी तरह मुंबई,लखनऊ,आगरा, कानपुर तथा ग्वालियर, भोपाल के साथ ही एन.सी.आर. में होली मिलन समारोह के अलावा नियमित होली गायन गम्मत होती रहती हैं।

इसके साथ ही भांग ठंडाई की मस्ती में हर्ष उल्लास से ऐसा लगता है कि हम सब अपने अपने शहर में ही नंदलाल संग ब्रजवासी जैसे ही होली के रंग गुलाल और गायन का आंनद लेते हैं.......

खेल होली नंदलाल संग, ब्रज में होली आई।।
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई
खेल होली नंदलाल संग, ब्रज में होली आई।।
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई।
खेल होली नंदलाल संग, ब्रज में होली आई।।

ब्रजवासी होने से वहां की पारंपरिक होली का आनंद लेने के साथ ही लखनऊ अयोध्या अवध का हिस्सा होने के कारण हम लोग नंदलाल संग होली के साथ ही राम लला के संग होली के हर्षोल्लास का अनुभव भी करते हैं.........

राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन हाथ अबीरा।
भरत के हाथ गुलाल, शत्रुघन के हाथ चोवा,
होली खेलत रघुवीरा, अवध में होली खेलत रघुवीरा।।
राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन हाथ अबीरा।
भरत के हाथ गुलाल, शत्रुघन के हाथ चोवा,
होली खेलत रघुवीरा, अवध में होली खेलत रघुवीरा।।

हमारा विश्वास है सभी बांधवों ने गुजिया चिप्स पापड़ खाते हुए हर्ष उल्लास से रंग गुलाल से होली खेलते हुए जीवन का आनंद लेकर देकर सम्मानित महसूस किया होगा।

पुनः सभी से लेख, विज्ञापन एवं प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

चैत्र नवरात्रि 2083, रामनवमी एवं महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं।।

होली का पर्व और फुलैरा

- अनामिका चतुर्वेदी, लखनऊ

अपनी एक सांस्कृतिक धरोहर

होली के त्यौहार पर हार्दिक शुभ कामनाओं सहित,

ब्रज क्षेत्र मंडल में होली का उत्सव बसंत पंचमी से लेकर रंग पंचमी तक 40-45 दिन मनाया जाता है। फागुन मास में, वातावरण में जैसे-जैसे ठंडक कम होती है, जगह-जगह नए पल्लव प्रस्फुटित होने लगते हैं,मानों बसंत का स्वागत करने को प्रकृति चारों तरफ अपनी रंग-बिरंगी छटा बिखेर रही हो कि अब तुम देखौ सैल फाग की.... उसी प्रकार जन मानस के अंतःकरण में भी नई उमंगें और प्रसन्नता पुष्पित होनें लगती है।

इसी हर्ष–उल्लास की अभिव्यक्ति अपना चतुर्वेदी समाज बहुत पुरातन समय से चली आ रही विशिष्ट लोक परंपरा होली–गायन और फुलैरा के रुप में करता आया है।

अपने समाज के लोक–पर्वों एवं लोक कलाओं के अंतर्गत फाल्गुन मास में होली के त्यौहार पर खेला जाने वाला फुलैरा खेल आकर्षक और मन को मोह लेने वाला होता है। जितना उल्लास एवं नई उमंगें लिए होली का त्यौहार होता है, उतने ही रंगीन फागुन ऋतु का स्वागत करते यह रंग–बिरंगे यह फुलैरा चौक भी होते हैं।

फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय फुलैरा दौजसे लेकर होली के त्यौहार तक पंद्रह दिन बालिकाएं घर के आंगन में फुलैरा (चौक) बनातीं हैं। घर की बड़ी महिलाएं,चौक लगाने के लिए आंगन का कुछ भाग गोबर से लीप कर,उस पर तरह–तरह की ज्यामितीय आकृतियाँ आरेख देतीं हैं। लड़कियाँ फिर उनमें रंग–बिरंगे रंग भरकर फागुन का स्वागत करतीं हैं।

लोक जीवन जितना सरल होता है, उतने ही विशुद्ध और सरलता का भाव लिए यह लोक–चित्र होते हैं और उतनी ही सहजता से इस कला में उपयुक्त होने वाली सामग्री जुटा ली जाती है। घर की महिलाएं और बिटियाँ, सामान्य जीवन में प्रयोग किए जाने वाले बर्तनों (करछुल, जाली, छन्नी,चमचा,थाली आदि) को सांचे के रूप में उपयोग करके तरह–तरह की आकृतियाँ बनाकर आंगन सजा लेतीं हैं। फूल–पत्ते, बेलें, सतिया, खटोला, करेला, पुरइन का पात, चिड़ियाँ–तोते, नदियाँ इत्यादि। कन्याएं फिर इनको रंग–बिरंगा भर देती हैं और इनमें भरने वाले रंग बड़ी सहजता से बना लेतीं हैं।आटा, हल्दी,रोली, ईंट पीसकर बनाया गेरुआ रंग, अबीर–गुलाल,कजर, अंडी के पत्ते पीसकर हरा रंग, आदि से सुंदर रंगीन चौक लगाती हैं।

होली–दहन पूर्णिमा वाले दिन तक फुलैरा चौक लगता है।

होली–दहन पूर्णिमा के दिन, होलिका जलने के पूर्व शाम को गांव की महिलाएं और बिटियाँ होली पूजने जाती हैं।होली मइया के चारों ओर आटे से घुंघरू का घेरा डाल कर चौक लगाती हैं। रोली–अक्षत से होली का पूजन कर, हलवा पूड़ी का भोग लगाती हैं। फिर घर वापस आकर नए घड़े (जो पहले से ले लिए जाते हैं),अनमास कर, उनमें पानी भर कर, घर के द्वार के दोनों ओर रख देती हैं। होली के पर्व पर नए घड़े लेने की मान्यता है। घड़े हमेशा जोड़े से लिए जाते हैं– दो घड़ों का जोड़ा, घड़ा और सुराही या घड़ा–लोटा, फिर चूने अथवा रोली से उन्हें अनमास दिया जाता है।

महिलाएं घर के आंगन में फुलैरा चौक लगाकर, छोटे होलिका दहन की तैयारी करती हैं।पहले से ही गोबर के उपले या गुल्लरियाँ(बीच में छेद वाले गोबर के चपटे गोले) बनाकर सुखा लेती हैं। फिर सारे पुरुष वर्ग एवं हर भाई के नाम की पांच–पांच(5–5) गुल्लरियाँ माला के रुप में पिरोती जाती हैं। गुलरियों को चौक पर रख कर उनका रोली–अक्षत से पूजन करती हैं।

होलिका जलने के मुहूर्त के समय, पुरुष वर्ग अबीर–गुलाल से होलिका का पूजन करते हैं – जिनपर सब नई फसल चढ़ाने की मान्यता है। गन्ने में गोला और नया अनाज (गेहूं की बालियाँ, होरा–चना..) बांध कर ले जाते हैं, प्रज्ज्वलित होने पर उनमें गोला भून लेते हैं।

जैसे ही पुरुष वर्ग घर लौटते हैं,सारी महिलाएं नए घड़ों का पानी घर के द्वार के दोनों ओर सिरा (डुरका) देती है– जिसको बाट– सिराना कहते हैं और घड़े उठाकर रख दिए जाते हैं, ग्रीष्म ऋतु में पानी पीने के लिए।

होली माता से भाई लोग जो अग्नि लेकर आते हैं,उससे महिलाएं चौक पर रखी(हर भाई के नाम की) गुल्लरियों को प्रज्ज्वलित करती हैं और सब होली मइया को नमन करती हैं। जैसा कि माना जाता है, कि होलिका–दहन से सब बुराइयाँ नष्ट हो जाती हैं और यह अच्छाई की बुराई पर विजय का सूचक है, उसी प्रकार से होली माता से अपने परिवार के कल्याण की प्रार्थना करती हैं कि सब बड़े और भाईयों के रोग–दोष,कष्ट एवं बाधाएँ होलिका में भस्म हो जाएं और होली मइया पूरे परिवार को स्वस्थ, भरा–पूरा

एवं सुंदर भविष्य का आशीर्वाद दें।

होली की परिक्रमा करती जाती हैं और गाते-गाते पूछती हैं कि - होली किन-किन के घर न्यौती गई हैं -

होली मेरी पाहुनियाँ, होली कौन के नौती जायँ,होली मेरी पाहुनियाँ,

(घर के पुरुष वर्ग के नाम लेकर होली को न्यौता देती हैं)

होली काहा-काहा ज्यौनार, होली मेरी पाहुनियाँ,
होली मूंग-भात ज्यौनार,ऊपर सैं घीय की धार,
होली मेरी पाहुनियाँ।
होली काहा-काहा ज्यौनार, होली मेरी पाहुनियाँ,
होली गुजिया-पूआ ज्यौनार और खीर की मनुहार,
होली मेरी पाहुनियाँ

घर में छोटे होलिका-दहन के बाद, अबीर-गुलाल से तिलक करती हैं,रंग लगाती हैं।पुरुष वर्ग सब बड़ों के पैर छूकर घर-घर आशीर्वाद लेतें हैं। गोला,बताशे-पेड़ा से उनके हाथ रखे जाते हैं।

इसी दिन घर में बान की बनी खाटें भी बाहर निकाली जाती हैं और बारी-बारी से थोड़ी-थोडी देर सब उन पर लेट लेते हैं।

गांव में मान्यता यह है कि अगले दिन से लगने वाले चैत्र मास के अंदर,न तो नए घड़े रख जाते हैं और न ही सोने के लिए खाटें निकाली जाती हैं,क्योंकि चैत्र मास चिंता भई भारी अर्थात चैत्र मास में नए घड़े लेने से और खाटें बाहर निकलने से, पानी पीने वालों को और खाटों पर सोने वालों को हमेशा चिंता बनी रहेगी।

इसलिए समस्त परिवार के शुभ- मंगल की कामना हेतु यह काम पूर्णिमा के दिन ही कर लिए जातें हैं। ढ़ोलक पूज कर होलियाँ गानी शुरु हो जाती हैं।अगले दिन परिवा पर फाग खलने के लिए टेसू के फूल पानी में भिगो दिए जाते हैं जिनका बड़ा ही अनोखा केसरिया रंग होता है एवं एक अद्वितीय मादक महक होती है।यह प्रचलित है कि टेसू के रंग से फाग खलने से चेचक आदि जैसी बीमारियाँ नहीं होती हैं।

ग्रामीण जीवन में जहां एक ओर बड़ी सरलता है, वहीं दूसरी ओर सरलता के साथ-साथ जीवन की अत्यंत गूढ़ और गहरी समझ भी है।

फुलैरा दौज से आरंभ हुआ फुलैरा चौक, होली-दहन पूर्णिमा पर होलिका जलने के साथ संपन्न हो जाता है-होलिका का पाहुने के रुप में स्वागत होता है, फिर होली ज्यौनार कराई जाती हैं और होली-गायन के साथ होली विदा हो जाती हैं।

यहाँ यह बताना उल्लेखनीय है कि गांव होलीपुरा में (जोकि हमारा ननिहाल है) होली-गायन की विशिष्ट विधा है- यहां सिर्फ काफी और पीलू जैसी सुगम रागों में ही होली नहीं गाई जाती,वरन यह 'चलती' से शुरु होकर 'लेद' और फिर 'धमार' जैसी क्लिष्ट शास्त्रीय-गायन शैलियों में,सामूहिक रूप से गाई जाती है।जिसके उपरांत 'चैती' गायन आरंभ हो जाता है।

बड़े हर्ष और उल्लास के साथ, फुलैरा चौक, टेसू के रंग, ठंडाई-गुजियाँ और होली गायन के साथ फागुन मनाया जाता है।

होली में उड़ने लगा अबीर

- शैलेंद्र चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

आया फागुन मास है,
गूंजे ढोल मजीर।
होली का हुड़दंग जमें
उड़ने लगे अबीर।।
आई होली झूम के,
उड़ता रंग, गुलाल
आसमान सतरंगी हुआ
कोयल कुहुके बाग में,
मंद सुगंध समीर।
राधा कृष्ण स्वरूप दिखे
रंगे यमुना तीर ।
रंगों की बोछार है
उड़ने लगा अबीर।
बाल वृध्द सब मस्त है
रंगों से सब अधीर।
हंसी ठिठोली चल रही
रसिया की थापों पर
थिरकने लगी सब टोली।
चुटकी भर रंग उछाल
मस्ती करती सब टोली

सुहागिन एवं औसान देवी

- **शिवांगी चतुर्वेदी**, भोपाल

औसान देवी की यह कथा सभी सुहागिन महिलाओं के सभी दुखों को दूर करके सुख में बदल देती है और सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं ।औसान देवी की पूजा जो महिलाएं पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ करती है उनकी समस्त मनोकामना पूर्ण होती है।

अवसान देवी की पूजा की सामग्री

1- सवाया (चना, गुड़ , मीठा) 125 ग्राम प्रत्येक के लिए।

2- ताजा फूल ,सिंदूर ,कलश, दी, दीपक ,अगरबत्ती और यदि संभव हो तो सफेद मिट्टी या एक बड़ी सुपारी जो पूजा में औसान देवी के प्रतीक रूप में पूजा में रखी जाती है ।

3-सुहाग का सामान (इच्छा अनुसार) बिंदी, सिंदूर ,काजल, महावर, लिपस्टिक, कंघा, शीशा, रबर बैंड, मेहंदी और चूड़ी यह सभी सुहाग का सामान एक पैकेट में पैक कर लेना चाहिए, जिन्हें आप महिलाओं को पूजा में देगे।

4-इस व्रत को सोमवार ,गुरुवार एवं शुक्रवार को ही करना चाहिए ।

5-इस व्रत को माह भादों एवं पौष(पूस) में नहीं करना चाहिए।

6- सुहागन महिलाओं की संख्या ऐसी हो जिसमें 2 का भाग न जाए जैसे 7, 9, 11, 13 ,15 (इच्छा अनुसार)

7- अगर आप 7 महिलाएं बुलाती हैं तो 8 पैकेट सुहाग का सामान तैयार करें क्योंकि एक औसान देवी का होता है, जिसे पूजा सम्पन्न करने वाली महिला प्रयोग कर सकती है।

अवसान देवी की पूजा का शुद्ध रूप औसान विधि से पूजा है। विवाह (शादी), कोई मनोकामना की इच्छा या पूर्ण होने पर या कोई भी मांगलिक अवसर पर यह पूजा की जाती है।

भगवान राम सीता के विवाह के बाद जनकपुरी से लौटने पर राजा दशरथ ने सुहागिन महिलाओं को निमंत्रण दिया और सम्मानित किया था।

विशेष- पूजा के पश्चात सुहागिन महिलाओं को भोजन करना चाहिए और मीठा पान अवश्य ही खिलाना चाहिए।

विधि

सर्वप्रथम जिस दिन सुहागिन करना हो ,उसके पहले जितनी सुहागिन खिलानी है उन्हें निमंत्रण दें और विनम्र निवेदन करें कि अगर कोई परेशानी ना हो तो आप पूजा समय तक व्रत कर लें, लेकिन अगर कोई महिला दवाई लेती है तो वह कुछ फल या फलाहार कर सकते हैं। पूजा के स्थान को साफ करें और एक पटा रखकर उस पर साफ आसन या कपड़ा बिछाए तत्पश्चात सुपारी या सफेद मिट्टी रखकर उसे देवी का प्रतीक मानकर पूजा करें ,पूजा के स्थान पर गणपति जी को भी स्थापित करें, फूल माला से उसकी सजावट करें, कलश में पानी भर कर रखें, सुहागिन का सामान (जो आपको सुहागिनों को देना है पूजा के स्थान पर ही रख ले, लगे हुए पान भी उसी स्थान पर रख ले) एक-एक कटोरा में गुड़, चना भी रख ले, मिठाई (125 ग्राम के पैकेट)प्रत्येक महिला के लिए भी रखना, पूजा के स्थान पर महिलाओं की संख्या के हिसाब से चूड़ी भी रखें जो पूजा के बाद प्रत्येक महिला एक-एक चूड़ी उठाकर मां के नाम की इस समय पहन लेंगे।

सुहागिनों को महावर लगाकर शुद्ध आसन पर बिठा दीजिए। इसके बाद पूजा शुरू कीजिए। औसान देवी ,कलश, गणेश जी सबको शुद्ध जल से सीच दीजिए ।चंदन, चावल ,रोली चढ़ा दें। सुहागिनो को सिन्दूर,चावल का टीका लगा दें। इसके बाद सवाया (125 ग्राम मिठाई)प्रत्येक सुहागिनों की गोद में रख दें । प्रत्येक को चना छिलकर ,याद रहे चना फूटना नहीं चाहिए । गुड़, चना हाथ में रखें। जिस महिला ने कथा रखी है ,सब महिलाएं उसको मिठाई ,गुड़ ,चना अपने में से निकाल कर थोड़ा-थोड़ा देगी और उसके बाद खुद उसमें से थोड़ा खाएंगे और बाकी बचा हुआ वह अपने घर ले जा सकती है जिन्हें वह अपने पति या अपने बेटे को खिला सकती हैं इसके पश्चात कथा सुनी जाएगी ,कथा की समाप्ति पर गोद में रखा प्रसाद ग्रहण कर ले, इसके बाद एक-एक सुहागन बैठे-बैठे ही अवसान देवी के पास आकर सिंदूर गौरी देवी से सुहाग ले ले और एक-एक चूड़ी भी ले ले। हाथ जोड़कर प्रणाम कर उठ जाएं, जब सब महिलाएं पूजा कर ले उसके बाद घी का दिया जलाकर मां की आरती की जाएगी। यह व्रत तुरंत फल देने वाला है, जिन-जिन महिलाओं ने यह व्रत किया है उनके सब कार्य सिद्ध हो गए हैं ,यह प्रमाणित है।

होली

- लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, फरौली/गाजियाबाद

होली त्यौहार अपने समाज में एक विशिष्ट स्थान रखता है। वृज क्षेत्र में होली का गायन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जिसकी रागों का क्रम है, जो पीलू, काफी से आरम्भ होकर धमार, लेह, पैंडा, दीपचन्दी, चाल, रसिया, विहाग, भैरवी आदि रागों में गायी जाती है। होली का यह दीर्घकालीन त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ होकर फाल्गुनी पूर्णिमा-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तक चलता है। होली गायन बसन्त पंचमी के दिन प्रारम्भ होता है और ढोलक, हारमोनियम, मंजीरें की थाप पर होली गायन के स्वर स्वतः ही उठने लगते हैः

आयो बसन्त कहौ उन हरि सों, बौरे, अम्ब बन फूली है सरसों।।

फूले कमल उमगे दोउ जुबना, गयो चितचोर कहाँ या ब्रज सों।।

औरन सों वे हँसत खिलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों।।

ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे कों कुबजा के करसों।।

राह चलन दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरि सों।।

कृष्ण गोपियों के संयोग के शालीन चित्रण हैं इसमें, कृष्ण विरह जैसी मर्मस्पर्शी वेदना हैः

जो तुम श्याम कूबरी से राजी, कूबरी आजु कहाँ तें ल्याऊँ।।

कालिन्दी सों जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।।

अतर फुलेल मलौं तेरे मुख पै, घिसि-घिसि चन्दन अंग लगाऊँ।।

चंदन काटि कें पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बनवाऊँ।

तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गुलसुइयाँ लगाऊँ।

कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच-बिच मौलसिरी लगवाऊँ।

नये-नये पात मँगाइ आम के, द्वारे पै बन्दनवार बँधाऊँ।

वृज की कुंज गलियों में वनमाली छिपे हैं और किशोरी जी की होली नन्द लाला को पकड़ लाती हैः

फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्दै लै गई भीतर गोरी।

भाई करी मन की 'पद्माकर' ऊपर नाई अबीर की झोरी।

छीन पिताम्बर कम्मर ते सु बिदा दई मीड़ कपालन रोरी।

नैन नचाइ, कही मुसकाइ लला फिरी अइयो खेलन होरी।

एवम

मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो।

घेरत हैं पनघट पर नटखट, सांझ गिने न सकारो।

ताली दे गारी गाबत है, लै लै नाम हमारो।।

भयो एसो मतबारो --- मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो।

होरी में बरजोरी रे कान्हा, पट घूंघट न उघारों।

हा हा खाऊं चुनरी मत पकड़ो,

झूंठो गुलाल न डारों, खडो हमरो घरवारो।।

मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो।

एवम

अरी - तेरो नंदलाला करै हैरान - 2

तेरो नंदलाला संग लिए ग्वाला -2,

हम हैं भोरी ब्रजवाला ll करै हैरान तेरो नंदलाला..

मैं पनघट ऊपर गई भरन को पनिया री -2,

अब कहा करों सखि ठाडो छैल छिकनियां,

कर बरजोरी गगर सिर फोड़ी-2

मेरी तोड़ी है मोहनमाला।। करै हैरान तेरो नंदलाला..

सुन मैया ये ग्वालनियां बहुत खिजावे री - 2,

मारग में मिल जाय मोय तो पकर नचावें ।

ठाड़ी ब्रजनारी बजाय रही तारी-२, कहे द्वे बापन वाला।।

करै हैरान तेरो नंदलाला..

तुम जसुदा (मैया) के ढिंग जाय कहा कर लीनो री - 2,

जो मारग में मिल गई मोय तेरौ दधि छीनों।

तेरो दधी खाऊं सखन को लुटाऊँ - 2, तेरो हाल करों बेहाला।।

करै हैरान तेरो नंदलाला..

सृष्टि का स्वामी गोपियों के द्वारा कितना विवश है, तरह-तरह के नाच-नाच रहा है? उसे नाचने में सुख मिलता है या स्वयं नाचने में?

बता बता घनश्याम मुरलिया कौने चुराई - 2

कौने रे तेरी चुराई मुरली - 2,

कहां धरी किन उठाई मुरली -2

देखो री जहां समाई मुरली - बता बता घनश्याम.......

कैसी मुरली काकी मुरली – 2,
तुम कहां धरी कित ढूंडत हो,
कौने न परो सौहे न करो।
तुम खोई जहां क्यों न ढुंडत हो।।
कौने रे तेरी चुराई मुरली ....

चोरी में चतुर तुम ही हो लला,
हमको काहे दोष लगावत हो – 2
हम बांस की फांस को का करिहें,
तुम ही मुख ताज लगावत हो।
कौने रे तेरी चुराई मुरली ....

होली से अच्छा अवसर और कौन सा होगा, जब ऐसा श्रृंगार किया जाय और शुभ मुहुर्त देखकर मनमोहन का वशीकरण किया जायः

साजि कैं जो चली, रँगीली खेलन होरी।।
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साधि चली सुधरी।
नैनन अंजन आँजि कें, मानों बाढ़ सिरोही धरी।।
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी।।
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही।।

तभी बेचारी मन में विसरती हैः
ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलों होरी।।
काऊ सौतिन संग खेलत हुइहैं, पिया रंग भरि–भरि झोरी।
अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भलौ उनको री,
पिया संग खेलैं जो होरी।।
जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हूँ न लीन्हीं मोरी।
मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवै बारी मोरी,
पिया संग खेलौ मैं होरी।।

तब क्यों न इर्ष्या हो, किशोरी जी के सौभाग्य से वृजराज स्वयं किशोरी जी के दास वने घूमते हैं, मुरली में पुकारते हैं, रुठने पर मनुहार करते हैं, रास रचाते हैं, रास्ता बुहारते हैं, फूल विछाते हैं और पैरो में महावर भी लगाते हैंः

तू बड़भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री।।
जो कबहूं तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री।।
तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली में तेरौ जस गावत है री।।
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मग झारत फूल बिछावत है री।।
सारद सेस महेस रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे, महावर पाँय लगावत है री।।

महाज्ञानी उद्धव के सारे तर्क कुंठित हो जाते हैंः
बहुत दिनन के रुठे श्याम, चलौ होरी में मनाय लावें रे।।
अबीर रोरी मलिकैं गुलाल म्हों मसलि कैं, गरवा लगाइ लावें रे।।
केसरि कुसुम के माटन रँग भरि भरि, फगुआ खिलाइ लावें रे।।
जुगुति–जतन सों, श्री नंद के नन्दन कों, गोदी में उठाय लावें रे।।
चोवा चंदन अतर अरगजा, रंग बरसाइ लावें रे।।

बृजराज के आते ही होली का हुडदंग शुरुः
अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं, जो श्याम आवेंगे ब्रज में पलटिकैं।।
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं, गारी मैं देउँगी घुँघटा पलटिकै।।
एक कुमकुमा ऐसो मैं मारूँ, जो बंसीवारे की आँखिन करकै।।
जो श्याम हमसों रूठि जायँगे, बिनती करौंगी मैं पकरि कै।।

एवम
नट नागर गोपाल कन्हैया, मुझ पर ना–ना रंग डार।
अभी जाय के गोकुल में कंस से करूंगी पुकार।।
कन्हैया मुझ पर ना–ना रंग डार कन्हैया मुझ......
नाथ तोड़ डाले हैं सब गहने मेरे, लोग कहें क्या कंस लगे हैं तेरे।–2
मारग रोके खड़ा रहे वो, करे हमेशा रार।। कन्हैया मुझ पर ना–ना रंग डार कन्हैया मुझ......
ले ग्वालों को संग इधर वो आ जावें, सब पर डालूं रंग उन्हें भी बहकावें। –2
माने ना वो बात हमारी, करता है तकरार।। कन्हैया मुझ पर ना–ना रंग डार कन्हैया मुझ......
सुनी बात ग्वालन की बोले यों कान्हा, अरी रूठ यों वाले हमसे ना जाना।–2
पहनाऊंगा बड़ा मनोहर, इन बाहों का हार।। कन्हैया मुझ पर ना–ना रंग डार कन्हैया मुझ......
हंसी जरा सी बात सांवरा की सुनके, पिचकारी ली छीन हाथ से उनके।–2
छोड़ो ना विश्वेश संग यह, नाथ करूं मनुहार।।
कन्हैया मुझ पर ना–ना रंग डार कन्हैया मुझ......

एवम
ललन मोरी सिगरी चूनर रंग डारी।
लें गागरि पनिया को निकसी –3,
घूंघट में पिचकारी। ललन मोरी....
बरज रहो बरजो नहि मानत –3,
कोटि करी मनुहारी। ललन मोरी..

राम प्रताप भयो या ब्रज में -३,
एसो ठीठ बिहारी। ललन मोरी....
एवम
मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम,
मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम।।
श्याम-बरन, बरनत न बनत मोपै,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु थाम।।
मंद हँसनि, दामिनी सी दसन-दुति,
पीत वसन ओढ़ें ललाम।।
कर मुरली उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल काम।
होली जैसा अवसर कहाँ मिलेगा, खुली चुनौतीः
मोहन तुम जिनि ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं।।
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हरी गोकुल नगरी।।
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरी।।
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी।।
एवम
सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

और चलिये हम सब देखेंः
चलौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रंगीली होरी।।
निकसीं भवन-भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी।।
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।
फगुआ हमारौ दीजै, हंसि माँगतीं बृज वाला।।
बाजै रबाव भेरी, ढपताल और मृदंगा।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।।
नंदनंदन श्री गिरधारी, बृषभानु की दुलारी।
'रसखान' खेलैं होरी, चिरजीव रहे यह जोरी।।

फिर तो वर्षा कैसी कि सावन भी तरसेः
पौरी वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर,
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिन दमकै री।।
खेलत हैं दामिनि धन सुन्दर,
कृष्ण रसिक संग री।
'दया सखी' फागुन के दिननि में, सावन सरसै री।।

और रंग ऐसा कि धरती अम्बर सब लालः
लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल।।
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ा रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल।।
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़िली, लालन के गल माल।।
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उड़गन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल।।
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल।।

देखिये यमुना तट पर हुडदंग मचा हैः
हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरैं, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल।।
'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल।।
और देखिये लाडली जी ने मान क्यों करा है- रुठना और मनाना?
लाड़िली मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ द्यौस लाड़िली, बैठी हौ भौंहे तान।।
मानि सिखावन लेहु आपनें, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान।।

क्यों न करे मान, देखिये कारणः
तुम भोरही आये होरी खेलन, राति कौन के रंग में रँगे हौ लाल।।
पलक पीक अंजन अधरन अरू, दियौ है महावर तिलक भाल।
'राम प्रताप' चतुर भामिनी बे, जिन मुख कियौ है गुलाल लाल।।
किन्तु इस ढीट के आगे मान भी नहीं चला और नया खेलः
श्यामा श्याम सों होरी, खेलत आजु नई।।
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भईं।
सखीं सखा भईं, सखा सखी भए, जसुमति भवन गई।।
गोरे स्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढ़प, नाचत हैं थेई थेई।।
पलटौ रूप दखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
'सूर' स्याम कौ वदन विलोकत, उधरि गई कलई।।

होली त्यौहार के आयाम

- **कनक चतुर्वेदी**, कोलकाता

मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तरायण होते ही मौसम में बदलाव शुरू होने लगता है, इसके बाद बसंत पंचमी से रंगीन बयार के साथ ही रंगों के त्योहार होली का प्रारंभ माना जाता है। होली का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। इसकी कहानी हिरण्यकश्यप नामक एक असुर राजा से जुड़ी है, जिसने अपने पुत्र प्रहलाद को भगवान विष्णु की पूजा करने से रोकना चाहा था। लेकिन प्रहलाद ने अपने पिता की बात नहीं मानी और भगवान विष्णु की पूजा जारी रखी। इससे क्रोधित होकर हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को प्रहलाद को जलाने के लिए कहा। होलिका एक शक्तिशाली असुरनी थी, जिसे एक वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी। लेकिन जब होलिका प्रहलाद को जलाने के लिए आग में बैठी, तो भगवान विष्णु ने प्रहलाद को बचाया और होलिका को आग में जलाकर मार दिया। इस घटना को होली के रूप में मनाया जाता है।

इसीलिए होली का अर्थ है अच्छाई की जीत और बुराई का नाश। यह त्योहार हमें यह सिखाता है कि सत्य और न्याय की हमेशा जीत होती है, और बुराई को हमेशा दंड मिलता है।

होली का महत्वः

होली का महत्व इस प्रकार हैः---

- यह त्योहार हमें रंगों के महत्व को समझाता है और हमें जीवन में रंगों का आनंद लेने के लिए प्रेरित करता है।
- यह त्योहार हमें अपने प्रियजनों के साथ समय बिताने और उनके साथ अपने रिश्तों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।
- यह त्योहार हमें बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देता है और हमें सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

होली का सामाजिक महत्वः

होली एक ऐसा त्योहार है जो लोगों को एक साथ लाता है और सामाजिक बंधनों को मजबूत करता है। इस दौरान लोग अपने प्रियजनों के साथ समय बिताते हैं, एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, और गुलाल उड़ाते हैं। होली का यह त्योहार हमें सिखाता है कि रंगों और खुशियों से भरा जीवन जीना चाहिए ।

होली का धार्मिक महत्वः

होली का धार्मिक महत्व भी बहुत है। यह त्योहार भगवान विष्णु की जीत का प्रतीक है, जिन्होंने हिरण्यकश्यप को मारकर अपने भक्त प्रहलाद को बचाया था। होली का यह त्योहार हमें सिखाता है कि सत्य और न्याय की हमेशा जीत होती है, और बुराई को हमेशा दंड मिलता है ।

होली का सांस्कृतिक महत्वः

होली का सांस्कृतिक महत्व भी बहुत है। यह त्योहार विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों को एक साथ लाता है और उनकी विविधता को प्रदर्शित करता है। होली का यह त्योहार हमें सिखाता है कि रंगों और खुशियों से भरा जीवन जीना चाहिए और एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए ।

होली के व्यंजनः

होली के दौरान विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं, जैसे कि गुजिया, ठंडाई, मालपुआ, और बर्फी। ये व्यंजन होली के त्योहार को और भी आनंदमय बनाते हैं।

स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ होली गायन से माहौल भी खुशनुमा हो जाता है,

गाइए......

होरी खेले नंदलाल, ब्रज में होली आई
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई
होरी खेले नंदलाल, ब्रज में होली आई
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई।।

रंगों की बरसात, गुलाल उड़े
नंदलाल के संग, गोपिन झूमे
होरी खेले नंदलाल, ब्रज में होली आई
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई।।

बाँसुरी बजाए, नंदलाल चले
गोपिन के संग, होली खेलने चले
होरी खेले नंदलाल, ब्रज में होली आई
रंग भरी रसिया, गोपिन के संग आई।।

ब्रज क्षेत्र में होली का त्योहार 40 दिनों तक चलता है, जो बसंत पंचमी से शुरू होकर रंग पंचमी तक चलता है। इस दौरान विभिन्न

प्रकार के आयोजन होते हैं, जैसे कि लट्ठमार होली, फूलों की होली, लड्डू होली, और हुरंगा।।

होली के प्रमुख आयोजन

– लट्ठमार होलीः बरसाना और नंदगांव में होती है, जहां महिलाएं पुरुषों पर लाठियां बरसाती हैं।

– फूलों की होलीः वृंदावन में होती है, जहां लोग एक-दूसरे पर फूलों की वर्षा करते हैं।

– लड्डू होलीः बरसाना में होती है, जहां लोग लड्डू से होली खेलते हैं।

– हुरंगाः दाऊजी मंदिर में होती है, जहां लोग रंगों से होली खेलते हैं।

– रंगभरनी एकादशीः वृंदावन में होती है, जहां लोग रंगों से होली खेलते हैं।

– छड़ीमार होलीः गोकुल में होती है, जहां लोग छड़ी से होली खेलते हैं ।

होली का यह त्योहार ब्रज क्षेत्र में बहुत उत्साह और भक्ति के साथ मनाया जाता है।

अरे वाह! नंदलाल के साथ होली खेलने का आनंद तो पूछो मत! रंगों का त्योहार है, खुशियों का समंदर है! रंगों में डूब जाओ, गुलाल उड़ाओ, और होली की खुशियों में शामिल हो जाओ!

यशोदा नन्द को........

- शिवानी मिश्रा, कानपुर

हमें तो जोगिनिया बनाई गयो री।।
आप तो ओढे साल दुशाला,हमें तो कमरिया उड़ाई गयो री।।
हमें तो जोगिनिया बनाई गयो री।।
आप तो खाये माखन मिसरी, हमें तो उपवासा कराय गयो री।।
हमें तो जोगिनिया बनाई गयो री।।
आप तो जाय द्वारिका छाये, हमें तो गोकुल में बसाई गयो री।।
हमें तो जोगिनिया बनाई गयो री।।
आप तो जाए रहे कुबरी संग,हमें तो बिरहिनिया बनाय गयो री।।
नैननि में पिचकारी दई,मोहि गारी दई,
होली खेली ना जाय,
तेरे लंगर लँगराई मो सो किन्ही,केसरि कीच कपोलनि दीन्ही,
ले गुलाल ठाढ़ो मृदु मुसिकाय।।
नेक न कानि करत काहू की,आंख बचावत बलदाऊ की,
पनघट सो घर लों बतराय।।
होरी खेलन आयो श्याम, आज जाहि रंग में बोरो री।
कोरे कोरे कलस मंगाय, बामे केसर घोरो री।
रंग बिरंग करो,याको,कारे से गोरो री।।
पार परोसिन सब मिलि के,आंगन में घेरो री।।
आज बिरज में होरी रे रसिया,होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रसिया।।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी,राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।।
अपने री अपने घर से निकसी, कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।।

महत्वपूर्ण सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सभी को सूचित किया जाता है कि भारत सरकार के डाक-तार विभाग द्वारा रजिस्ट्ररी सेवा बंद कर दी गयी है। डाक-तार विभाग द्वारा रजिस्ट्री सेवा को स्पीड पोस्ट में विलय कर दिया है। जिससे पोस्टेज का खर्च बढ़ गया है। दिनाँक 11 जनवरी 2026 की मुंबई की कार्यकारिणी की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इच्छुक बंधु पत्रिका स्पीड पोस्ट से 1200/-रु जमा कर मंगवा सकते हैं। सामान्यतः पत्रिका साधारण डाक से जा रही है।

धन्यवाद

शशांक चतुर्वेदी, मंत्री,

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

होली - रंग सरस

- भरत चतुर्वेदी 'अचल', गोवाहाटी

अब तो सखी फागुन ऋतु आयौ, ढफ गोपाल बजावै ।।
केसरि अबीर गुलाल मलौ, मुख नंदलाल बुलावै ।।
खेलों फाग श्याम सँग सजनी, जोर मनोज जनावै।।
एक तौ डर मोहि सासु ननद कौ, दूर्जे लाज लजावै ।।
कहा बानि परी सैयाँ तोरी रे, मोसों खेलन आयो होरी ।।
हम सों श्याम होरी बनि खेलत, और सखिन सों थोरी।।
अबीर गुलाल के थार भरे हैं, मुख मसलन कों रोरी।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चिर जीवहु यह जोरी।।
अँखियन भरत अबीर, बीर मोरी पीर न जानै ।।
हार तोरि गलगूँज मरोरी, लै अबीर मुख सानै ।।
रोके सैं औरहु उरझत है, लै पिचकारी तानें।।
'ललित किशोरी' बरजत हारी, नंदनंदन नहिं मानें ।।
कान्हा तुमहींका ब्रजके इजारदार, मोपैरँग छिरकत पियबार-बार।
रँग छिरकत मेरे कुमकुम मारत, अँगिया के करि दीन्है तारतार।
करमेरी पकरि कलाई मेरीमसकी, चुलिया के करि दीन्हौ तारतार।।
**
वन को चले दोऊ भाई, इन्हें कोई रोकौ री माई।।
आगे आगे राम चलत है, पाछे लछिमन भाई।
ताके पीछेचालति जानकी, शाब बरनि न जाई ।।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, लछिमन बिन ठकुराई।
सौता बिना मोरी सूनी रसोइया, कौन करे चतुराई ।।
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै, पवन चलै पुरवाई। काऊ बिरछ तन भींजत होइंगे, सीता सहित दोऊ भाई ।।
लंका जीति राम घर आये, घर घर बाजत बधाई।
मात कौशल्या करति आरती, शोभा बरनि न जाई ।।
**
श्रवण सुनत कटि जात पाप जहँ, सीताराम खेलें होरी ।।
कोन के हाथ कनक पिचकारी, को जा अबीर भरें झोरी ।।
कौन से ये यह रंग बनायी, कौन की चूनरि रंग बोरी।।
राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन अबीर भरें झोरी।
भरत शत्रुघन रंग बनायौ, सीता की चूनरि रंग बोरी।।
--

आजु नगर में धूम मची है, हो होरी खेलत कुंवर कन्हाय।
उठति कौंच मग बीच वृन्दावन, नील पीतपट रहे हैं चुचाय ।।
बंनी झुकीं, अलक की झलकनि, मानो मेघ रहे झर लाय ।
बाज ताल मृदंग झाँझ ढफ, भेरि रबाब बीन सहनाय।
**
चंग उपंग खंजरी महुअरि, नुपूर धुनि सुनि नगर सिहाय।
चातक मोरि कोकिला बोले, दादुर बोले हैं मदन जगाय।
ऋतु बसन्त फूले बन उपवन, द्रुम द्रुम लता रही लपिटाय।।
इन्द्र कुबेर वरुण सनकादिक रविं-रथ ससि रथ चल न काय।
जोगी जती तपी मुनि ग्यानी, उनहूँ के जोग रहे विसराय।।
सारद सेस महेश बखानत, उनहूँ पै हरि गति जानि न जाय।
चिरजीवी ब्रजरात साँवरे 'सूर' विमल इतनौ जस गाय ।।
--
आजु नगर में धूम मची है, हो होरी खेलत कुंवर कन्हाय।
उठति कौंच मग बीच वृन्दावन, नील पीतपट रहे हैं चुचाय ।।
बंनी झुकीं, अलक की झलकनि, मानो मेघ रहे झर लाय ।
बाज ताल मृदंग झाँझ ढफ, भेरि रबाब बीन सहनाय।
**
चंग उपंग खंजरी महुअरि, नुपूर धुनि सुनि नगर सिहाय।
चातक मोरि कोकिला बोले, दादुर बोले हैं मदन जगाय।
ऋतु बसन्त फूले बन उपवन, द्रुम द्रुम लता रही लपिटाय।।
इन्द्र कुबेर वरुण सनकादिक रविं-रथ ससि रथ चल न काय।
जोगी जती तपी मुनि ग्यानी, उनहूँ के जोग रहे विसराय ।।
सारद सेस महेश बखानत, उनहूँ पै हरि गति जानि न जाय।
चिरजीवी ब्रजरात साँवरे 'सूर' विमल इतनौ जस गाय।।

पारंपरिक रसिया

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी भोपाल

फागुन मास ढोलक की थाप मंजीरे और झांझ की मधुर ध्वनि के साथ होली गायन का मौसम। होली राग रंग का लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है संगीत और रंग इसके प्रमुख अंग हैं। होली गायन की परंपरा बसंत पंचमी से प्राचीन काल से है बसंत पंचमी से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। होली का त्योहार हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। लेकिन मथुरा की पारंपरिक लठमार होली पूरे देश में प्रसिद्ध है। मथुरा तथा वृंदावन में 15 दिन तक होली का त्योहार मनाया जाता है साथ ही में होली का गायन भी। रसिया ब्रज क्षेत्र का लोकगीत है जिसमें भगवान कृष्ण तथा राधा एवं गोपियों के संग होली खेलने का वर्णन होता है रसिया में। हास्य एवं व्यंग का पुट भी देखने को मिलता है। रस की दृष्टि से यह श्रृंगार रस प्रधान होता है। भक्ति रस के रसिया भीउपलब्ध हैं। यथा ---

खेले मसाने में होली

वियोग रस भी रसिया में देखने को मिलता है,-- मैया कैसे लामें धीर प्राण दर्शन को भटक रहे

2= जब तैं धोको दैकें गयौ,काउ के संग नाहि खेली होरी।।

यदि हम वर्तमान समय की बात करें तो। रसिया का विकृत रूप आज हमें देखने और सुनने को मिलता है जिन्हेंपरिवार के साथ बैठकर सुना भी नहीं जा सकता।

आ जाओ सकता है। हमारे जो परंपरागत रसिया तथा होली हैं। उनको हम सुरक्षित रखें एवं साथ ही में उनका प्रचार-प्रसार भी हो

हमारे समाज में होली गायन की। समृद्ध परंपरा है। चतुर्वेदी के सभी गांव में प्रत्येक राग में होली गाई जाती है। यथा। मथुरा में रसिया, पुरा ताल गांव में लेद,होलीपुरा में धमार,चन्द्रपुरमे ठ्डउआ,तरसोखर में जकड़ी,मेंनपुरी में काफी राग में गायन होता है शास्त्री संगीत में 25 रागों में गायन होता है हमारी पारंपरिक होलियां प्राय सभी रागों में उपलब्ध है।

***

होली आई रे रंगीली होली आई रे
होली आई रे आई रे होली आई रे
रंग अबीर उड़ावत छैला
पिचकारी मारे रसिया होली आई रे होली आई रे आई रे होली आई रे
लहंगा पहन चुनरिया ओढ़ी
स्वांग धरे घूमे रसिया। होली आई रे होली आई रे आई रे होली आई रे
देवरा कहत सुनो मेरी भौजी
विन भौजी फीकी होरी होली आई रे आई रे होली आई रे

भौजी कहते सुनो मेरे देवरा
तुम संग को खेले होरी। होरीआई रे आई रे होरी आई रे

बॉह पकड़ रंग दीनी रसिया
तुम संग हम खेले होरी आई रे आई रे होरी आई रे

खेल रहे देवर भौजी होली आई रे
श्रीमती उषा चतुर्वेदी भोपाल

पिया सॉची बताउ पिया सॉची बताऊ
होरी में हुयंगो रंग ओर गुलाल
पिया जल्दी से आउ पिया जल्दी आउ
होरी में हुयेगो रंग और गुलाल
पिया सॉची बताओ पिया सॉची बताओं
होरी में खेलेंगे रंग और गुलाल।

1 मैया की चिंता तुम नाने करो
मैया को दिखिये बुढऊ बब्बर शेर।
पिया सॉची बताऊ सॉची बताऊ
होरी में हुयगो रंग और गुलाल

2 पाहुने की चिन्ता ना नेकऊ करो
गुझियाँ पापडियन बनाय देऊगी ढेर।।
पिया सॉची बताऊ पिया साँची बताऊ
होरी में हुइगो रंग और गुलाल

,3- सिलबट्टा भगिया को धरो है तैय्यार।

घोटेंगे विजिया करेगे धमाल
बालम साँची बताऊ पिया सॉची
 बताउ।
गिन गिन तरइयाँ कटत नाहि रात
खेलूँगी होरी पिया तोरे साथ।
मोहि सॉची बताऊ मोहि साँची।बताऊ
घोटा को लोटा रखूँगी तैयार

***

यशोदा हटको को अपने लला कों
मोसो रार करत है रोज
मग रोकत और माखन खावत ढ़ेर
रोके तो मेरी बाँह मरोडत
बेदा दीन्हो तोड।
यशोदा हटको अपने लला को
मोसो रार करत है रोज।

घर जाऊँ मेरी सास लड़त है।
ताने ननदी देय
सांवरिया सुन मुसकी देत है
नाच नचाँय देओं तोय

माखन तो तू घरते ले जाय
सासुल लेय मनाय
छोटी ननद को ब्याह कराय देय
ना टोके तब कोय

***

यशोदा नंद को मोड़ा हमें रंग में भिगोए गओ री
ओरी गुईया। रंग में भिगोए गओरी।
सारी मेरी सगर बिगारी कंचुकी मेरी रंग दइ सारी।।
मेरी तो वह गागर गिराए गयो री
यशोदा नंद को मोड़ा तो हमें रंग मे भिगोंय गओ री।
चूड़ियां चटकी कंगन खुल गओ।
मेरी तो नथ बेसर गुमाय गओ री।
आप कूद कदम पर चढ गओ
सरवा सभी को दूर ही कर गओ
कदम्ब पै बैठो मुरली बजाई रहो री।।
घर कैसे जाऊं लाज आवत है
ननदी घर में मोहे हटकत है।।
सासु लिया मेरी बहुत रिसाय रही री।

यशोदा तुम मोडाय नहीं हटको
मेरी तो ख्वारी कराए गयो री
यशोदा नंद को मोड़ा तो हमे रंग में भिगोए गयो री
फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे।
हम सब मिल खेलें फगुआ
फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे

रंग अबीर झोलिन में भर लये
आओं अब खेले फगुआ

फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे
केसर कींच कपोलन भर दई
स्वांग धरे घूमे रसिया।
फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे।

भौजी कहते सुनो मेरे देवरा
तुम संग ना खेलों फगुआ।

फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे।

बाजत झांझ ढोल मृदंग सब
रसिया गा रहो है फगुआ।
फागुन आयो रे आयो रे फागुन आयो रे

***

जसोदा हटको को अपने लला कों
मोसो रार करत है रोज
रार करत रोज
कि मोसे होली खेले झकझोर
जसुदा हटको अपने लला को मौसे रार करत है रोज।

1 मग रोकत और मटकी फोड़त दधि खावत है ढ़ेर
भर पिचकारी मोपे मारी सबरो
रंग दयो मोय।
जसुदा हटको अपने लला को
मौसे रार करत है रोज।

रोके तो मेरी बाँह मरोडत
बेदा दीन्हो तोड।
हाहा खाय पड़ू बांके पइयाँ
नही छोड़त है मोय।
जसुदा हटको अपने लला को

मोसो रार करत है रोज।

घर जाऊँ मेरी सास लड़त है।
ताने ननदी देय
सांवरिया सुन मुसकी देत है
नाच नचाँय देय मोय
जसुदा हटकोअपने लला को
मोसे से रार करत है रोज
ग्वाल बाल संग बंसी बजावत
बैठ कदम्ब की ओट
ताने देय और हंसी उड़ावत
ना बकसत है मोय
जसु दा हटको अपने लला को
मौसे होली खेलत झकझोर
माखन तो तू घरते ले जाय
सासुल लेऊ मनाय
छोटी ननद को ब्याह कराय देय
ना टोके मै तोय
जसुदा हटको अपने लला को
मोसे होली खेलत झकझोर

***

रसिया संकलित

2: कान्हा मत मारे पिचकारी मेरे घर सास लड़ेगी रे कान्हा मत मारे पिचकारी (२)

सास डुकरिया मेरी बड़ी मोटी गारी देगी ना देगी मोय रोटी
देवरानी जेठानी मेरी जन्म की बैरन कलह करेंगी रे
कान्हा......
जाय जाय झूठ पिया से बोले एक की चार चार की सोलह
नंद बड़ी बदमाश पिया के कान भरेगी रे
कान्हा....
कछु न बिगड़ेगो श्याम तिहारो मो को होयेगो देश निकारो
ब्रिज की नारी दे दे तारी हंसी करेंगी रे
कान्हा......
जोरू हाथ पहूँ तेरे पइयां
पकड़ो मत श्याम मेरी बहियाँ

सूर श्याम मोतयनी की माला टूट गिरेगी रे
कान्हा..

/ रंग में होली कैसे खेलेगी जा सांवरिया के संग।
रंग में----
कोरे कोरे कलश मँगाये उन में घोरो रंग
भर पिचकारी सम्मुख मेरी गोरी रह गई दंग। रंग में होली कैसे खेलेगी जा सांवरिया के संग।
ढोलक बाजे मंजीरा बाजे और बजे मृदंग।
कान्हा जी की बंसी बाजे राधा जी के संग रंग में । रंग में होरी कैसे खेलेगी जा सांवरिया के संग।
लहंगा तेरो घूम घूमरो चोली है सतरंग। बलम तुम्हारे बड़े निखट्टू तुम चलो हमारे संग
रंग में होली कैसे खेलेगी जा सांवरिया के संग।।

4 : रसिया को नार बना रे रसिया को हां हां रसिया को हां रसिया को नार बनाओ रे रसिया को
कटी लहंगा गलमही कंचुकी चुनार जाए उढाबो रे रसिया को।
हाथों मेहंदी पांव महावर नथ बेसर पहनाबो री रसिया को।
आंख में कजरा बालों में गजरा पायलिया पहनाबो री रसिया।
नारायण ताली बजाई के यशोदा निकट नचावो री।रसिया को,

***

नीकी लगे सजन मोहि तोरी बतियाँ
हँस हँस करत तू मीठी बतियाँ
सीधी कलेजवा में जाये बतियाँ
मोहि नीकी लगे------/
भोर होत तू जाय रे बगियाँ
मैंभी जाऊँ भरन पनियाँ
सखियाँ करत है कनबतियाँ
मोहि नीकी लगे-----
शरम लगत मोहि नीची अखियाँ
खुसपुस-खुसपुस करत बतियाँ
मोय देख मुसकाय सखियाँ
मोहि मीठी लगे,तोहार बतियाँ

“अम्मा” की याद में : रंग, मुस्कान और नई उम्मीदें

- प्रखर मिश्र, मुंबई

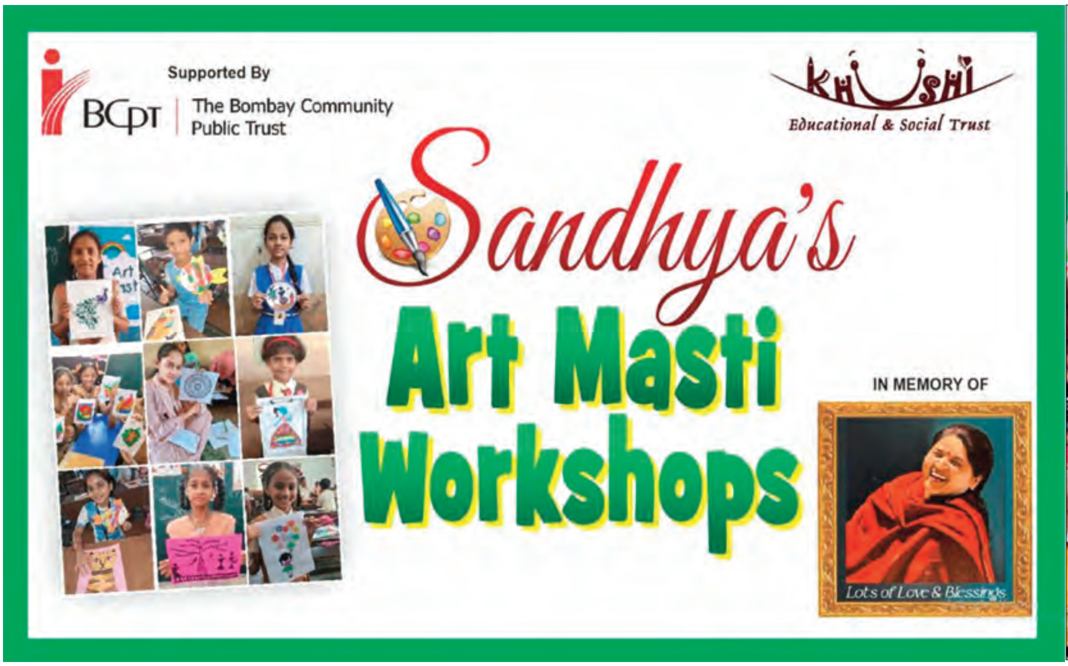

जनवरी 2021 में मेरी माँ, श्रीमती संध्या मिश्रा, के जाने के बाद से हर साल उन्हें याद करते हुए लिखना एक तरह से उनसे संवाद बनाए रखने जैसा रहा है। इस बार उनकी उसी पुरानी आदत को आगे बढ़ाने की कोशिश है, जिसे वे हमेशा “बस शौक़ है मेरा” कहकर हल्के में लेती थीं – पेंटिंग और शिल्पकारी (Art & Craft) माँ के लिए ये शौक़ केवल समय काटने का साधन नहीं था। यह उनका शांत, ध्यानमय, समय होता था जब वे रंगों और रेखाओं के बीच खुद से बात-चीत करती थीं। उन्होंने घर की दीवारों से लेकर मित्रों और रिश्तेदारों के घरों तक असंख्य पेंटिंग्स भेंट कीं। कई सालों तक वे बच्चों के लिए पेंटिंग और शिल्पकारी की कक्षाएँ भी चलाती रहीं, जहाँ वे बच्चों को ड्रॉइंग सिखाने से ज्यादा उनकी कल्पना को खुला छोड़ने पर ज़ोर देती थीं।

आज, उनके जाने के बाद, वही शौक़ एक नए रूप में ज़िंदिगियाँ छू रहा है। कई वर्ष पूर्व, मेरे पिताजी संजय मिश्र द्वारा शुरू की गयीं “Sandhya Art Masti Workshops” न सिर्फ़ कैंसर से लड़ रहे बच्चों के लिए, बल्कि मुंबई की अनेक निम्न आय स्कूलों के बच्चों के लिए एक ख़ुशी और प्रेरणा का स्तोत्र बन गया है। पूरे वर्ष, कई जगहों पर नियमित आयोजित इन कला-कार्यशालाओं में उन्हें रंगों, अनेक प्रकार के शिल्पों, पेपर और ब्रश के साथ खुलकर खेलने और अपनी रचनात्मक कुशलताओं को ऊभारने का अवसर मिलता है। इन सत्रों में बच्चों का उत्साह, उनकी हँसी मज़ाक और रंगों के साथ निर्भीक प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि कला बीमारी हो या रोज़मर्रा की चुनौतियाँ – दोनों के बोझ को हल्का कर देती है, और बच्चों व उनके देखभाल करने वालों के दिन में उजाला भर देती है।

इन “workshops” के बारे में सुनते और अनुभव करते समय अक्सर लगता है कि माँ की पेंटिंग्स अब केवल हमारे घर की दीवारों तक सीमित नहीं रहीं। उनकी बनाई हुई दुनिया अब उन बच्चों तक पहुँच रही है, जिनके बचपन पर अस्पताल के कमरों और इलाज की छाया है। पहले वे अपने हाथों से कैनवास पर रंग भरकर ख़ुशी बाँटती थीं; अब उनके नाम से चल रही ये कला कक्षाएँ अनगिनत चेहरों पर मुस्कान और सुकून बिखेर रही हैं। माँ को याद करते हुए यह जानना सुकून देता है कि उनका साधारण सा शौक़ उनके जाने के बाद भी लोगों के लिए ख़ुशी और उम्मीद का ज़रिया बना हुआ है। शायद किसी जीवन की सबसे सुंदर विरासत यही होती है – कि हमारे पसंदीदा काम, हमारी छोटी छोटी आदतें, हमारे न रहने पर भी दूसरों के दिनों को थोड़ा उजला करती रहें। (र.क्र.-3390)

हिंदू नवसंवत्सर् -- इतिहास और महत्ता

- सुचित्रा चतुर्वेदी, **लखनऊ**

हिंदू नववर्ष का प्रारंभ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से माना जाता है। यह समय वसंत ऋतु के आगमन का सूचक होता है, जब प्रकृति नवजीवन से भर उठती है। इसी कारण हिंदू कालगणना में इसे नवसंवत्सर के रूप में स्वीकार किया गया है।

इस वर्ष नवसंवत्सर् 2083 वि चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा (गुरुवार 19 मार्च 2026) से प्रारंभ हो रहा है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इसे अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है, किंतु भाव एक ही होता है— नव आरंभ और सकारात्मक परिवर्तन।

हिंदू नववर्ष की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय पंचांग और चंद्र-सौर कालगणना प्रणाली से जुड़ी है। भारतीय ऋषियों ने खगोलीय गणनाओं के आधार पर समय को मापने की एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक पद्धति विकसित की। मान्यता के अनुसार इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ हुई थी, इसलिए इसे सृष्टि संवत्सर का आरंभ भी कहा जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह संवत्सर भारतीय समाज में शासन, कृषि, व्यापार और धार्मिक जीवन की समय-सीमा निर्धारित करने का आधार रहा है।

इतिहास में हिंदू नववर्ष का प्रयोग राजकीय अभिलेखों, दानपत्रों और धार्मिक ग्रंथों में व्यापक रूप से मिलता है। पर्व-त्योहार, व्रत-उपवास, यज्ञ, संस्कार और शुभ कार्यों के मुहूर्त इसी संवत्सर के अनुसार निश्चित किए जाते रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह केवल तिथि परिवर्तन नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन-व्यवस्था से जुड़ा हुआ है।

हिंदू नववर्ष की महत्ता धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक तीनों स्तरों पर है। यह आत्मचिंतन, संकल्प और नवीन ऊर्जा का अवसर प्रदान करता है। लोग पुराने वर्ष की भूलों से सीख लेकर नए लक्ष्य निर्धारित करते हैं। सांस्कृतिक रूप से यह भारतीय परंपरा, प्रकृति के साथ सामंजस्य और समय के प्रति सम्मान को दर्शाता है। इस प्रकार हिंदू नववर्ष संवत्सर भारतीय सभ्यता की निरंतरता, आध्यात्मिक चेतना और जीवन के नवोन्मेष का प्रतीक है। आप सभी को हिंदू नववर्ष संवत 2083 वि पर हार्दिक शुभकामनाएं।।

होली के गीत

- शैलेंद्र चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

होली के रंग हमेशा से बहुवर्णी रहा है। उत्तर प्रदेश से लेकर बिहार तक होली पर फाग गायन की परंपरा है। फागुन में गाए जाने वाले लोकगीतों को फाग कहा जाता है। ब्रज के होली गीतों के कृष्ण नायक है। अवध में राम को केंद्र में रखकर लोक गायन की परंपरा रही है। शिव तो हर जगह अलग अलग रूप में आते है।

होली गीतों के शास्त्रीय पक्ष पर हम सोचते हैं तो सबसे पहले धमार आता है। होली और धमार के बीच प्रगाढ संबंध है। मान्यता है कि धमार की रचना तानसेन और उनके शिष्यो ने की थी। विशिष्टता यह है कि धमार गायन की शैली तो है ही वादन में एक ताल भी है। इसे लोकसंगीत ने भी अपने अनुसार अपनाया है। गायन और वादन दोनों में धमार का अपना सौंदर्य है। इसमें दुगुन, चौगुन जैसी लयकारियां लोकप्रिय है। लेकिन सिर्फ धमार तक ही होली तक सीमित नहीं है बल्कि ध्रुपद, छोटे और बड़े खयाल और ठुमरी में होली गीतों की लोकप्रियता भी कम नहीं। सबसे ज्यादा लोकप्रियता तो राग काफी में गाए गीतों की है। होली के गीतों में आरोही और अवरोही क्रम में सभी सात स्वरों का उपयोग किया जाता है। जैसे इस राग में लोकप्रिय गीतों की बात करें तो होली खेलत नंद लाल लोकप्रिय गीतों में से एक है। राग बसंत, राग बहार और राग हिंडोल जैसे रागों में भी बसंत के चैती, दादरा और ठुमरी वाले गीत लोकप्रिय रहे हैं।

होली के गीत सिर्फ आनंद के लिए नहीं होते। आनंद तो मात्र एक तत्व होता है। होली के गीत ही है जो पीढियों से इस पर्व की सामूहिकता की परंपरा को बनाए बचाएं हुए हैं। होली गीतों में भक्ति और प्रेम एकाकार हो जाते हैं। पारंपरिक लोकगीतों में लोकप्रियता कृष्ण गोपियों व राधा के संग, शिव गौरा के संग, राम सिया के संग गलियों में होली खेलते दिखते है।

नवरात्रि में कंजिका पूजन

श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

शक्ति की उपासना हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है और यही कारण है शक्ति की उपासना और संकल्प का पावन पर्व है नवरात्रि। भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में शक्ति उपासना के दो पर्व होते हैं एक चैत्र मास में और दूसरा शरद ऋतु में दोनों ही शक्ति उपासना के पर्वों में हिंदू जनसाधारण श्रद्धा और आस्था के साथ मां दुर्गा की आराधना करते हैं। नवरात्र में लोग अपनी श्रद्धा और भक्ति के कारण 9 दिन तक व्रत रखते हैं इन दोनों पर बम को नवरात्रि कहते हैं 9 दिन और नवरात्रि होने के कारण यह नवरात्रि कहलाती हैं मां दुर्गा शक्ति की रूप और अन्याय के विरुद्ध अन्याय करने वाले का कल्याण नहीं करती भक्तगण 9 दिन तक अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार व्रत करते हैं जिसकी जितनी शारीरिक क्षमता होती है वह श्रद्धा के साथ व्रत पूर्ण करता है नवरात्रि का व्रत लोग कठोर तपस्या के रूप में करते प्राय देखा गया है कुछ लोग 9 दिन तक सिर्फ जल के ऊपर ही रहते हैं कुछ लोग लोंग का जोड़ा खाकर 9 दिन व्रत करते करते हैं तथा मां की आराधना भक्ति भावना से करते हैं।

मां दुर्गा के नौ रूप है और नवरात्र में प्रत्येक दिन मां दुर्गा के एक रूप की आराधना व पूजा की जाती घर में घट स्थापना करने के बाद जौ बोते है जीने जवारे कहा जाता है जहां जवारे बोए जाते हैं उसी के बीच में मां के नाम की घट की स्थापना की जाती मां का स्थान बहुत पवित्र और शुद्ध रखा जाता है विशेष बात यह है जहां जवारे बोए जाते हैं वहां दीपक नहीं लगाते मां की मूर्ति अथवा चित्र के सामने दाहिनी तरफ दीपक लगाया जाता है। घटस्थापना के बाद प्रथम दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी तृतीय दिन मां चंद्रघंटा चतुर्थ दिवस मां कुष्मांडा पंचम दिवस मां स्कंदमाता छठवें दिन मां कात्यानी सातवें दिन मां कालिका आठवें दिन महागौरी तथा अंतिम दिन अर्थात नवे दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है मां के रूप जिनकी हम 9 दिन पूजा करते हैं भक्तों को अलग अलग फल देती हैं सुख शांति वैभव ऐश्वर्य संस्कार सफलता संयम सरलता या मन की निर्मलता रोगों को दूर करना अच्छा जीवन में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हो यह

फल भक्तों को प्राप्त होता है। नवरात्रि का व्रत समाप्त करने के बाद नौ कन्याओं का पूजन किया जाता है जिसे कंजक पूजन कहते हैं कंज का पूजन करने के बाद ही व्रत संपूर्ण होता है हमारी जो मान्यताएं हैं उनमें कंजिका या कन्या 2 वर्ष से 10 वर्ष के बीच की ली जाती है कनिका पूजन सप्तमी से लेकर अष्टमी एवं नवमी को भी किया जा सकता है कुछ लोग नौमी को व्रत नहीं खोलते वह 10 में दिन व्रत खोलते हैं और उसी दिन गंज कंजिका का पूजन हवन को भोजन कराते हैं अष्टमी को जो कंज का भोजन कराते हैं वह महागौरी की पूजा करते हैं तथा हवन के समय कन्याओं को बुलाकर हवन में आहुति दिलवा ते हैं। जिन कन्याओं को भोजन के लिए बोला ना हो उन्हें 1 दिन पहले निमंत्रण दें जब वह घर में प्रवेश करें तो उनका स्वागत फूल बरसा से करना चाहिए उन्हें स्वच्छ आसन पर बैठा कर उनके चरण किसी थाली या यह परात में धोना चाहिए तथा धोया हुआ जल पूरे घर में छिड़क देना चाहिए उसे नाली में तक कभी ना डालें पैरों को लाल अथवा सफेद कपड़े से पहुंचकर उसमें कुमकुम लगाएं माथे पर कुमकुम लगाएं तथा चरण स्पर्श करें उसके बाद घर का बना हुआ शुद्ध भोजन उन्हें प्रेम से कराएं भोजन में पूरी हलवा खीर चने की सब्जी अवश्य होना चाहिए इसके अतिरिक्त आप और व्यंजन भी खिला सकते हैं किंतु व्यंजनों में एक पीला व्यंजन अवश्य होना चाहिए भोजन कराने के उपरांत कन्याओं के पैरों में महावर लगाएं लाल चुनरी उड़ाई तथा साथ में उपहार दें उपहार में यदि खिलौनों या पढ़ने की सामग्री हो तो बहुत अच्छा होता है किंतु उपहार देने के बाद भी दक्षिणा देना बहुत आवश्यक है वह आप अपने श्रद्धा के आधार पर दे सकते हैं तबीयत संपूर्ण व्रत आपका पूरा होगा उसके उपरांत

जब कन्या घर जाने लगे तब उन्हें पान एवं सुपारी भी दें मान्यता यह है 9 दिन मां दुर्गा अपने मायके आती हैं जिस तरह से हम अपनी कन्या की विदा करते हैं उसी तरह से इन कन्याओं की भी विदा करें उसके उपरांत प्रसाद ग्रहण कर अपने व्रत का परायण करें।.

यह उपहार कदापि न दें उपहार में किसी प्रकार का बर्तन ना दें कुछ

कुछ मान्यताओं के अनुसार कहा जाता है की कन्याओं को विषम संख्या में भोजन कराना चाहिए यदि 10 साल से बड़ी कन्या हो तो उसे भोजन अवश्य कराएं किंतु कन्या पूजन ना करें अंत में कन्याओं के चरण स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद ले एवं मां से प्रार्थना करें मां मैंने आपका व्रत बड़ी प्रेम एवं श्रद्धा से किया है मेरे जीवन में सदा समृद्धि रखें

शक्ति की उपासना हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है और यही कारण है शक्ति की उपासना और संकल्प का पावन है नवरात्रि

भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में शक्ति उपासना के दो पर्व होते हैं एक चैत्र मास में और दूसरा शरद ऋतु में दोनों ही शक्ति उपासना के पर्वों में हिंदू जनसाधारण श्रद्धा और आस्था के साथ मां दुर्गा की आराधना करते हैं। नवरात्र में लोग अपनी श्रद्धा और भक्ति के कारण 9 दिन तक व्रत रखते हैं इन दोनों पर बम को नवरात्रि कहते हैं 9 दिन और नवरात्रि होने के कारण यह नवरात्रि कहलाती हैं मां दुर्गा शक्ति की रूप और अन्याय के विरुद्ध अन्याय करने वाले का कल्याण नहीं करती भक्तगण 9 दिन तक अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार व्रत करते हैं जिसकी जितनी शारीरिक क्षमता होती है वह श्रद्धा के साथ व्रत पूर्ण करता है नवरात्रि का व्रत लोग कठोर तपस्या के रूप में करते प्राय देखा गया है कुछ लोग 9 दिन तक सिर्फ जल के ऊपर ही रहते हैं कुछ लोग लोंग का जोड़ा खाकर 9 दिन व्रत करते करते हैं तथा मां की आराधना भक्ति भावना से करते हैं।

मां दुर्गा के नौ रूप है और नवरात्र में प्रत्येक दिन मां दुर्गा के एक रूप की आराधना व पूजा की जाती घर में घट स्थापना करने के बाद जौ बोते है जीने जवारे कहा जाता है जहां जवारे बोए जाते हैं उसी के बीच में मां के नाम की घट की स्थापना की जाती मां का स्थान बहुत पवित्र और शुद्ध रखा जाता है विशेष बात यह है जहां जवारे बोए जाते हैं वहां दीपक नहीं लगाते मां की मूर्ति अथवा चित्र के सामने दाहिनी तरफ दीपक लगाया जाता है। घटस्थापना के बाद प्रथम दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी तृतीय दिन मां चंद्रघंटा चतुर्थ दिवस मां कुष्मांडा पंचम दिवस मां स्कंदमाता छठवें दिन मां कात्यानी सातवें दिन मां कालिका आठवें दिन महागौरी तथा अंतिम दिन अर्थात नवे दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है मां के रूप जिनकी हम 9 दिन पूजा करते हैं भक्तों को अलग अलग फल देती हैं सुख शांति वैभव ऐश्वर्य संस्कार सफलता संयम सरलता या मन की निर्मलता रोगों को दूर करना अच्छा जीवन में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हो यह फल भक्तों को प्राप्त होता है। नवरात्रि का व्रत समाप्त करने के बाद नौ कन्याओं का पूजन किया जाता है जिसे कंजक पूजन कहते हैं कंज का पूजन करने के बाद ही व्रत संपूर्ण होता है हमारी जो मान्यताएं हैं उनमें कंजिका या कन्या 2 वर्ष से 10 वर्ष के बीच की ली जाती है कनिका पूजन सप्तमी से लेकर अष्टमी एवं नवमी को भी किया जा सकता है कुछ लोग नौमी को व्रत नहीं खोलते वह 10 में दिन व्रत खोलते हैं और उसी दिन गंज कंजिका का पूजन हवन को भोजन कराते हैं अष्टमी को जो कंज का भोजन कराते हैं वह महागौरी की पूजा करते हैं तथा हवन के समय कन्याओं को बुलाकर हवन में आहुति दिलवा ते हैं। जिन कन्याओं को भोजन के लिए बोला ना हो उन्हें 1 दिन पहले निमंत्रण दें जब वह घर में प्रवेश करें तो उनका स्वागत फूल बरसा से करना चाहिए उन्हें स्वच्छ आसन पर बैठा कर उनके चरण किसी थाली या यह परात में धोना चाहिए तथा धोया हुआ जल पूरे घर में छिड़क देना चाहिए उसे नाली में तक कभी ना डालें पैरों को लाल अथवा सफेद कपड़े से पहुंचकर उसमें कुमकुम लगाएं माथे पर कुमकुम लगाएं तथा चरण स्पर्श करें उसके बाद घर का बना हुआ शुद्ध भोजन उन्हें प्रेम से कराएं भोजन में पूरी हलवा खीर चने की सब्जी अवश्य होना चाहिए इसके अतिरिक्त आप और व्यंजन भी खिला सकते हैं किंतु व्यंजनों में एक पीला व्यंजन अवश्य होना चाहिए भोजन कराने के उपरांत कन्याओं के पैरों में महावर लगाएं लाल चुनरी उड़ाई तथा साथ में उपहार दें उपहार में यदि खिलौनों या पढ़ने की सामग्री हो तो बहुत अच्छा होता है किंतु उपहार देने के बाद भी दक्षिणा देना बहुत आवश्यक है वह आप अपने श्रद्धा के आधार पर दे सकते हैं तबीयत संपूर्ण व्रत आपका पूरा होगा उसके उपरांत जब कन्या घर जाने लगे तब उन्हें पान एवं सुपारी भी दें मान्यता यह है 9 दिन मां दुर्गा अपने मायके आती हैं जिस तरह से हम अपनी कन्या की विदा करते हैं उसी तरह से इन कन्याओं की भी विदा करें उसके उपरांत प्रसाद ग्रहण कर अपने व्रत का परायण करें।

यह उपहार कदापि न दें उपहार में किसी प्रकार का बर्तन ना दें कुछ

कुछ मान्यताओं के अनुसार कहा जाता है की कन्याओं को विषम संख्या में भोजन कराना चाहिए यदि 10 साल से बड़ी कन्या हो तो उसे भोजन अवश्य कराएं किंतु कन्या पूजन ना करें अंत में कन्याओं के चरण स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद ले एवं मां से प्रार्थना करें मां मैंने आपका व्रत बड़ी प्रेम एवं श्रद्धा से किया है मेरे जीवन में सदा समृद्धि रखें।

श्रद्धांजली

श्री भरत चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. श्री घनश्याम दास चतुर्वेदी
(कठा ऊपर,होलीपुरा/इंदौर)
जन्म 11/11/42
गोलोक गमन-28/12/25

श्रद्धावनत

सभापति	:-	श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल
उप-सभापति	:-	श्री मुनीन्द्र नाथ (नोयडा), श्री पंकज (मुम्बई), श्रीमती आभा (नागपुर), डा. कुश (इटावा), श्री विनोद (गुरूग्राम), श्री सुमंत (आगरा), श्री अंशुमान (जयपुर)
सचिव	:-	श्री शशांक (भोपाल)
सह-सचिव	:-	श्री आशुतोष (कानपुर), श्री करूणेश (ग्वालियर), श्री गोविन्द (जयपुर), श्री अभयराज (गुरूग्राम), श्री मनीष (कोटा), श्रीमती बबीता (लखनऊ), श्री संजय (अहमदाबाद)
कोषाध्यक्ष	:-	श्री ज्ञानेन्द्र (साहिबाबाद)
सम्पादक	:-	श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादकः- श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सार्वजनिक विनम्र अपील* 21.02.2026

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी

सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु 24000/- वार्षिक (रु. 2000/ - प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 44 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है। वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2025-26 की प्रथम किश्त 31 मार्च 2025 (अप्रैल 25) व द्वितीय किश्त (जुलाई 25) में पूर्व में लाभार्थियों के खाते में प्रेषित की जा चुकी है।

सहयोग राशि Rs. 2,56,200/- लाभार्थियों के - बैंक खातों में सीधे भेजी जाती है। सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

35. स्व. ओंकार नाथ चतुर्वेदी, कानपुर की स्मृति में श्री विकास जी द्वारा - 1,00,000/- द्वारा
36. श्री अविनाश जी,कानपुर द्वारा 12000/-
37. श्री भुवन कुमार जी,गुरुग्राम द्वारा 36000/-38. श्री संजय मिश्रा जी, नोयडा 1100/-
39. Col. गौरव जी,लखनऊ 10200/-
40. श्री शेखर जी,इंदौर 5000/-
41. श्री अनुराग जी,गुरुग्राम 5000/-
42. श्री कृष्णकांत जी,लखनऊ 12000/-
43. गुप्त सहयोग 2500/-
44. डॉ. मनोज जी,ग्वालियर 12000
45. श्री सुदेश जी,जयपुर 1100/-
46. श्री रचित जी,झाँसी 12000/-
47. श्री रुचिर जी,झाँसी 12000/-
48. श्री मनोज जी,सागर 3000/-
49. स्व. श्री दयाशंकर जी (कानपुर/होलीपुरा) की चतुर्थ पुण्य तिथि (17/10/25) पर उनके पुत्रों राजीव एवं संजीव रु. 24,000/-
50. श्री प्रवेश जी, चाम्पा 1100/-
51. श्रीमती मंजुल जी, फरीदाबाद 1000/-
52. गुप्तदान 5000/-
53. श्री प्रवीण जी,लखनऊ 5000/-
54. श्री जयंत जी,लखनऊ 12000/-
55. स्व. श्री सत्य देव जी की पुण्य तिथि (24 दिसम्बर) पर उनकी पत्नि श्रीमती करुणा जी (अनूप शहर/ कोलकाता) द्वारा - 5100
56. श्रीमती गौरी जी, नोएडा 24000/-
57. राहुल चौबे जी,हरदा 2100/-
58. विष्णु कांत जी,नोएडा 12000
59. अभय कुमार जी एटा की द्वितीय पुण्य तिथि के अवसर पर 5100/-
60. स्व.प्रह्लाद नारायण जी स्मृति में श्री मनोज जी, सागर द्वारा 2000/-
61. श्री अखिल जी 2100/-
62. श्रीमती इंदु जी,नोएडा 3100/-
63. श्री विनय जी,अहमदाबाद 5000/-
64. श्री रजनीकांत जी,हावड़ा 5000/-
65. श्रीमती बीना जी,हैदराबाद 2100/-
66. श्री मनोज जी,सागर 2000/-
67. श्री पदम जी-प्रशांत जी, लखनऊ 14,000
68. ग्रुप कैप्टन अक्षत जी, आगरा 12,000
69. श्रीमती क्षमा जी,ग्वालियर 1100
70. अपनी पत्नी स्व. मणिका जी की स्मृति में श्री सुब्रत जी,नोएडा द्वारा 25000/-
71. श्री रितेश जी,मुंबई 1101/-
72. श्री आलोक जी,नासिक 1100/-
73. श्री शैलेन्द्र जी,फिरोजाबाद 1100/-
74. श्री प्रवेश जी,लखनऊ द्वारा अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर 5100/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग : **Rs.14,41,002/-**

सहयोग राशि भेजने के लिए :-महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें ।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9826086879

शाखा समाचार

गाजियाबाद

बड़े हर्ष का विषय है कि श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा गाजियाबाद अपनी स्थापना के 20 वर्ष पूर्ण करने जा रही है। इस सभा की स्थापना का मूल उद्देश्य गाजियाबाद एवं उसके आस-पास रहने वाले सभी बान्धवों को आपस में जोड़ने के साथ साथ समाज की साँस्कृतिक धरोहर को सहेजना है। समय समय पर होने वाले होली मिलन, तीज मिलन, दीप महोत्सव एवं पिकनिक के माध्यम से हमारी सभा के प्रतिनिधियों ने इसे प्रभावी भी बनाया है। कोई भी सभा समाज के सामूहिक सहयोग से ही फलीभूत होती है। सभी का योगदान गाजियाबाद सभा के लिए बड़ा ही सराहनीय रहा है। इस सभा की नींव रखने वाले कुछ बांधव आज हमारे बीच नहीं रहे, हमारी सभा उनके योगदान के लिए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करती है। मेरी शुभकामनाओं के साथ गाजियाबाद सभा को हृदय से धन्यवाद।

– **प्रदीप चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

***

कानपुर

दिनाँक 15/02/26 महाशिवरात्रि के पर्व पर मेरे निवास पर होलियों के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। होलियों के गीतों का आनन्द हम सभी ने लिया। मेरे साथ रंजना जी, आभा जी, प्राची जी, गीता जी, प्रीति जी, रेणु जी, नेहा जी, अनुराग जी एवं अंकुर जी आदि शामिल हुए होलियों के गायन के बाद सभी ने फलाहार किया।

– **शिवानी मिश्रा,** कानपुर

एग्जाम के लिए बेहद काम के टिप्स

- डॉ. अलका चौबे, मुम्बई

सीबीएसई ने कक्षा 10वीं और 12वीं की 2026 बोर्ड परीक्षाओं की डेटशीट जारी कर दी है. अक्सर परीक्षा की चिंता बच्चों को तनाव का शिकार बना देती है. साथ ही, कोर्स पूरा करने के चक्कर में छात्रों को अक्सर एंजाइटी भी होने लगती है. ऐसे में जरूरी है कि एग्जाम के दौरान इन समस्याओं से दूर रहकर आराम से पढ़ाई पर फोकस किया जाए. एग्जाम के स्ट्रेस को मैनेज करने के लिए कुछ प्रभावी रणनीतियां हैं, जो छात्रों को मदद कर सकती हैं.

एक व्यवस्थित शेड्यूल बनाएं : छात्रों को चाहिए कि वे अपनी पढ़ाई के लिए एक स्पष्ट और व्यवस्थित शेड्यूल बनाएं. यह शेड्यूल उन्हें समय पर सभी विषयों को कवर करने में मदद करेगा. नियमित ब्रेक लेना भी महत्वपूर्ण है. पढ़ाई के बीच में थोड़ी देर का आराम मानसिक थकान को कम करता है और ध्यान केंद्रित रखने में मदद करता है.

शारीरिक गतिविधियों में शामिल हों : अधिकतर छात्र पढ़ाई में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि वे शारीरिक गतिविधियों की अनदेखी करते हैं. रोजाना कम से कम एक घंटे की एक्सरसाइज करना आवश्यक है. यह न केवल शरीर को सक्रिय रखता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है. योग और ध्यान भी तनाव कम करने में सहायक होते हैं.

सकारात्मक सोच विकसित करें : छात्रों को अपने विचारों पर ध्यान देना चाहिए और नकारात्मकता से बचना चाहिए. खुद की तुलना दूसरों से करने से बचें, क्योंकि इससे आत्मविश्वास प्रभावित होता है. सकारात्मक सोच रखने से मानसिक स्थिति मजबूत होती है और परीक्षा के प्रति दृष्टिकोण बेहतर होता है.

टेक्नोलॉजी का उपयोग करें : आजकल कई ऐप्स उपलब्ध हैं, जो अध्ययन और स्वास्थ्य प्रबंधन में मदद कर सकते हैं. ये ऐप्स नींद, खान-पान, और अध्ययन की आदतों पर नजर रखने में सहायक होते हैं. सही खान-पान जैसे दूध, फल, सब्जियां और नट्स का सेवन करना भी महत्वपूर्ण है.

अनावश्यक दबाव से बचें : परीक्षा के बारे में अत्यधिक चिंता करने से मानसिक तनाव बढ़ता है. छात्रों को चाहिए कि वे पाठ्यक्रम को ध्यानपूर्वक देखें और सलेक्टिव स्टडी से बचें. अच्छी नींद लेना भी जरूरी है ताकि दिमाग तरोताजा रहे.

संगीत और कला में रुचि लें : परीक्षा के दौरान तनाव कम करने के लिए संगीत सुनना या कला जैसी गतिविधियों में भाग लेना फायदेमंद हो सकता है. ये गतिविधियां मन को शांत करती हैं और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं.

परिवार का समर्थन प्राप्त करें : परिवार का समर्थन बहुत महत्वपूर्ण होता है. माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों पर अतिरिक्त दबाव न डालें और उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें. इन उपायों का पालन करके सीबीएसई के छात्र परीक्षा के दबाव को बेहतर तरीके से संभाल सकते हैं और अपनी तैयारी पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं.

समाज समाचार

- **संशोधन :** विगत फरवरी 26 अंक में भूलवश श्री सौरभ जी उपलब्धि का व श्री संजय जी,श्री विनय जी के अन्नपूर्णा सहयोग की सूचना गलत स्तंभ में हो गयी, जिसका हमें खेद है। हम उन सभी बांधवों की लंबी उम्र की कामना करते हैं।

- श्री सौरभ मिश्रा सुपुत्र स्वर्गीय गिरजा शंकर मिश्रा-स्व. श्रीमती इंदिरा मिश्रा (सिकंदरपुर/भिलाई) को कांग्रेस पार्टी का भिलाई शहर जिला ब्लॉक प्रमुख मनोनित किया गया। बधाई

- श्री संजय चतुर्वेदी, अहमदाबाद द्वारा महासभा विशेष सहायता कोष में रुपये ग्यारह हजार रु. मात्र प्रदान किए। आभार (र.क्र.-3370)

- श्री विनय चतुर्वेदी, अहमदाबाद द्वारा महासभा अन्नपूर्णा सहायता कोष में 5000/- रु. मात्र प्रदान किए। आभार (र.क्र.-3368)

- चि. उत्कर्ष चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती लता- श्री आलोक चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्री कैलाश चंद (कम्पिल/नासिक) का शुभ विवाह सौ. सौम्या चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती प्रतिमा-श्री शैलेंद्र चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. श्रवण कुमार चतुर्वेदी (फ़रिज़ाबाद) के साथ 10 फरवरी 26 विवाह फिरोजाबाद में सम्पन्न होने पर आलोक जी ने 1100/- व शैलेन्द्र जी ने 1100/- रूपये महासभा अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.-3385,86)

- चि.सत्यम (आई. आर. एस.) सुपुत्र डॉ. राकेश चंद्र चतुर्वेदी (तालगांव/मथुरा) का शुभ विवाह 4 दिसम्बर को मथुरा में संम्पन हुआ। इस उपलक्ष्य में आपने 1100/- की सहयोग राशी चतुर्वेदी चन्द्रिका को भेंट की l(र.क्र.-3387)

- श्रीमान राजीव एवं श्रीमती ऋचा चतुर्वेदी (आगरा) ने अपनी सुपुत्री रिमझिम के विवाह चि० सुधांशु चतुर्वेदी सुपुत्र श्री राकेश जी एवं श्रीमती उमा चतुर्वेदी (होलीपुरा/बेंगलुरु) का विवाह 3 फरवरी 2026 को दिल्ली में सम्पन हुआ। इस उपलक्ष में चतुर्वेदी महासभा को 2100/- की सहायता प्रदान की। (र.क्र.-3384)

- चि. सारांश सुपुत्र श्री प्रवेश, "मुन्ना"-श्रीमती विनीता चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. कृष्णानंद जी (तरसोखर/लखनऊ) के विवाह के अवसर पर अन्नपूर्णा सहयोगार्थ 5100/- प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-3389)

बिछड़े स्वजन

* श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी,टोनी पुत्र स्व० गिरीश चंद्र जी (कमतरी/देहरादून) का स्वर्गवास दिनाँक 2 फरवरी 26 को देहरादून में हो गया।
* श्रीमती अल्पना चतुर्वेदी पत्नी श्री मिथलेश चतुर्वेदी (करेंटी/लखनऊ) का स्वर्गवास लगभग 62 वर्ष की आयु में दिनाँक 6 फरवरी 26 को लखनऊ में हो गया।
* श्री श्याम बिहारी चतुर्वेदी पुत्र स्व० कैलाश चन्द्र जी (फिरोजाबाद/झांसी) का स्वर्गवास दिनाँक 8 फ़रवरी 26 को झांसी में हो गया।
* श्रीमती इन्द्रा चतुर्वेदी पत्नी स्व.गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,इच्छु (सिकन्दरपुर/कानपुर) का दिनाँक 21 फरवरी 26 कानपुर में अपने पुत्र के पास निधन हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धांजली

श्री भरत चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. श्री घनश्याम दास जी - स्व. श्रीमती इंदिरा देवी
(कठा ऊपर, होलीपुरा/इंदौर)
जन्म 11/11/42 - गोलोक गमन-28/12/25

नश्वर यह देह, अमर है आत्मा का प्रकाश,
स्मृतियों में सदा जीवित रहेगा आपका स्नेह और विश्वास।

शोकाकुल परिवार:

कुसुम चतुर्वेदी (भाभी)
उमेश चंद्र (ज्येष्ठ भ्राता) एवं मोहिनी चतुर्वेदी (भाभी)
ज्योत्स्ना चतुर्वेदी (पत्नि)
अंकुर (पुत्र) एवं मंगला चतुर्वेदी (पुत्रवधु)
अबीर (पुत्र) एवं दीप्ती चतुर्वेदी (पुत्रवधु)
राशि (पौत्री) एवं मेधा (पौत्री)
एवं समस्त होलीपुरा परिवार

(र.क्र. 3382)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' मार्च 2026

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

(र.क्र. 3171–10/12)